साप्ताहिक

बुलंद गोंदिया

खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 2 | अंक : 49 | गोंदिया : गुरुवार, 14 से 20 जुलाई 2022 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : रु. 5

उफनता नाला बना काल
दो अलग-अलग मामले में पांच युवक बहे

एक को बचाया चार की तलाश शुरु

तुमखेड़ा खुर्द में तीन युवक व गोंदिया के गौतम नगर परिसर में दो युवक बहे

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिले में गत 24 घंटे के दौरान हो रही तेज बारिश तथा जिले में हुई अतिवृष्टि के चलते सभी नाले उफान पर चल रहे हैं। इसी के चलते दो अलग-अलग मामले में पांच युवक नाले में बह गए। जिसमें एक को बचाया गया व चार की तलाश जिला आपदा प्रबंधन द्वारा की जा रही है।

गौरतलब है कि गोंदिया जिले और राज्य में हो रही मूसलाधार बारिश के चलते चारों ओर पानी ने हाहाकार मचा रखा है। जिसके चलते सब तरफ जलमग्न की स्थिति हो चुकी है, जिसमें जरासी लापरवाही भी जानलेवा साबित हो जाती है। इसी के चलते बुधवार 13 जुलाई को दो अलग-अलग घटना घटित हुई है। जिसमें पांच युवक उफनते नाले में बह गए। जिसमें एक को बचाया गया व चार की तलाश की जा रही है।

पहला मामला गोंदिया तहसील के अंतर्गत आने वाले तुमखेड़ा खुर्द निवासी 3 किसान युवक गांव के नाले में आयी बाढ़ को देखने के लिए गए थे। इसी दौरान उनका संतुलन बिगड़ जाने से तीनों युवक उफनते नाले के पानी में बहने लगे। जिसमें से एक युवक सागर परतेती (28) को बचाया गया। वहीं आशिष धर्मराज बागडे (23) संजू प्रमोद बागडे (25) पूजारीटोला - लोधीटोला (तुमखेडा खुर्द) दोनों सगे भाई पानी में बह गए। जिसकी जानकारी गोंदिया जिला आपदा प्रबंधन विभाग को मिलते ही घटनास्थल पर आपदा विभाग के दल द्वारा पहुंचकर दोनों युवकों की तलाश अभियान शुरु किया।

दूसरा मामला गोंदिया शहर के अंतर्गत बाजपाई वार्ड गौतम नगर परिषद निवासी दो युवक जावेद अली हजरत अली सैयद (24) व बाबा उर्फ रेहान कलीम शेख (15) यह पिंडकेपार की ओर से बहने वाले चौथे नालें के समीप गए थे। जहां उनका भी संतुलन बिगड़ जाने से बह गए। उपरोक्त घटना शाम 4 बजे के दौरान घटित हुई है। उपरोक्त घटनास्थल पर भी जिला आपदा प्रबंधन विभाग का दल पहुंच चुका है तथा युवकों की तलाश शुरु है।

बारिश का तांडव
जिले में बहे कच्चे पुल व पर्यायी मार्ग

गोंदिया-तिरोड़ा व गोंदिया-आमगांव मार्ग ठप्प

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिले के सभी विभागों में गत 24 घंटों के दौरान हुई अतिवृष्टि 83.5 मिलीमीटर बारिश के चलते सब ओर हाहाकार मच गया है। सभी नाले व पोखर जलमग्न हो चुके हैं। इसी के चलते बुधवार 13 जुलाई को जिले के अनेक स्थानों के कच्चे व पर्याय मार्ग बहने से जिला मुख्यालय का संपर्क टूट गया है। जिसमें मुख्य रुप से गोंदिया-तिरोड़ा मार्ग व गोंदिया-आमगांव मार्ग का समावेश है।

गोंदिया तिरोड़ा मार्ग पर राष्ट्रीय महामार्ग के निर्माण के चलते ग्राम एकोड़ी के समीप पुल का निर्माण किया जा रहा है। जिसके लिए मार्ग पर पर्यायी रास्ता निर्माण किया गया। लेकिन पर्यायी मार्ग पक्का न होने से पानी के तेज बहाव में बह गया। जिससे दोनों ओर का मार्ग अवरुद्ध हो गया व घंटों यातायात जाम रहने के साथ ही तिरोड़ा का गोंदिया जिला मुख्यालय से संपर्क टूट गया।

पांगोली नदी पर बना कच्चा पुल टूटा

गोंदिया-आमगांव राज्य महामार्ग पर ग्राम गिरोला से सिंधीटोला जाने वाले मार्ग पर पांगोली नदी के ऊपर बना कच्चा पुल भारी बारिश के चलते मंगलवार की रात बह गया। उल्लेखनीय है कि यह हादसा मध्यरात्रि को घटित हुआ, उस दौरान मूसलाधार बारिश शुरु थी। इसके चलते यातायात न के बराबर था जिससे किसी भी प्रकार की जनहानि नहीं हुई किंतु पांगोली

के ऊपर बनाए गए कच्चे पुल के टूट जाने से गोंदिया आमगांव मार्ग यातायात ठप हो गया व वाहनों की कतारें दोनों और लगी रही।

जिले में अनेक स्थानों पर पुल पर पानी से ग्रामों का संपर्क टूटा

निरंतर हो रही मूसलाधार बारिश के चलते गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के सभी छोटे नाले उफान पर आ चुके हैं जिसके चलते अनेक ग्रामों का संपर्क जिला मुख्यालय से टूट चुका है। राष्ट्रीय महामार्ग निर्माण में ठेकेदार की लापरवाही गोंदिया से तिरोड़ा गोंदिया से आमगांव के राष्ट्रीय महामार्ग का निर्माण कार्य गत वर्ष भर से शुरु है। इस दौरान मार्ग पर छोटे बड़े पुलों का निर्माण किया जा रहा है। किंतु राष्ट्रीय महामार्ग का निर्माण करने वाली बारबारिक कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा लापरवाही बरतते हुए बारिश के पूर्व छोटे फूलों का समय पर निर्माण नहीं किया गया। व कच्चे रास्ते बनाए गए जो बारिश के दौरान बहने की संभावना अधिक रहती है।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त मार्ग जिले का प्रमुख मार्ग होने से इस प्रकार का हादसा घटित होने से संपर्क टूट जाता है तथा मार्गो के दोनों ओर वाहनों की लंबी लंबी कतारें लगने के साथ ही मरीजों व अन्य आवश्यक सेवा भी ठप हो जाती है। जिससे परिसर के नागरिकों द्वारा मार्ग निर्माण करने वाली कंपनी के खिलाफ आक्रोश दिखाई दिया।

तालाब में डूबकर दो मासूमों की मौत

गोंदिया तहसील कारंजा के भद्रुटोला में हुआ हादसा

बुलंद गोंदिया - गोंदिया तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम कारंजा / भद्रुटोला निवासी दो मासूमों की तालाब में डूब कर मौत हो गई। उपरोक्त घटना 9 जुलाई की शाम घटित हुई। प्राप्त जानकारी के अनुसार भद्रुटोला निवासी पवन विजय गाते (10) कक्षा तीसरी का विद्यार्थी तथा वंश उपराडे (8) कक्षा पहली का विद्यार्थी यह अपने अन्य चार साथियों के साथ ग्राम के ही तालाब के समीप मैदान में खेलने के लिए गए थे। जिसके पश्चात पिंडकेपार के समीप भद्रुटोला के एक तालाब में नहाने के लिए उतरे, जिसमें पानी अधिक गहरा होने तथा उनका पैर दलदल में फंस जाने से वे 2 विद्यार्थी निकल नहीं पाए। उपरोक्त घटना के पश्चात सहयोगी विद्यार्थियों द्वारा दोनों साथियों को बचाने का प्रयास किया किंतु वे सफल नहीं हो पाए। इसकी जानकारी आसपास के नागरिकों को दी, तब तक दोनों बच्चे गहरे पानी में डूब चुके थे।

घटना की जानकारी मिलते ही ग्राम के नागरिक घटनास्थल पर जमा हो गए व दोनों मासूमों का शव देर रात गहरे पानी से निकाला गया व 10 जुलाई को शासकीय जिला चिकित्सालय में शव विच्छेदन कर परिजनों को सौंपा गया। उपरोक्त मामले में गोंदिया ग्रामीण पुलिस थाने में आकस्मिक मौत का मामला दर्ज कर आगे की जांच गोंदिया ग्रामीण पुलिस द्वारा की जा रही है।

धान उत्पादकों को बड़ी राहत, ४३ लाख क्विंटल होगी धान खरीदी

अन्नदाताओं की खुशी बरकरार रखने हम सदैव उनके सुख-दुख में शामिल - विधायक अग्रवाल

बुलंद गोंदिया - महाविकास आघाड़ी सरकार के कार्यकाल में कृषि विभाग द्वारा धान खरीदी लक्ष्य की केंद्र को गलत रिपोर्ट प्रस्तुत करने पर इसका खामियाजा विदर्भ के किसानों को भुगतना पडा। रबी सीजन-2021-22 में बंपर धान की पैदावार होते हुए भी किसानों से मात्र 30 प्रतिशत धान की खरीदी सरकारी समर्थन मूल्य पर हुई, जबकि 70 प्रतिशत धान घरों में रखा बर्बाद हो रहा था। किसानों के इस गंभीर ज्वलंत मुद्दे को लेकर भाजपा के सांसदों, विधायकों ने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्रसिंह तोमर, राज्य के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से भेंट कर उन्हें किसानों को राहत देने की अपील की थीं। केंद्रीय मंत्री एवं राज्य के उप मुख्यमंत्री द्वारा आश्वस्त किये जाने

पर राज्य में नई भाजपा-सेना सरकार के गठन होते ही किसानों के इस गंभीर मुद्दे पर सकारात्मक कदम उठाकर इसका समाधान किया गया।

केंद्र सरकार ने रबी सीजन 2021-2022 की धान खरीदी हेतु लक्ष्य को बढ़ाकर अब 27 लाख क्विंटल से 43 लाख क्विंटल कर दी है। इसका पत्र भी केंद्रीय कृषि मंत्रालय द्वारा राज्य सरकार को जारी कर दिया गया। शासकीय धान खरीदी केंद्रों पर अब किसान अपना शेष धान 31 जुलाई तक बिक्री कर सकते है।

गोंदिया के विधायक अग्रवाल ने, केंद्र सरकार द्वारा किसानों के हित मे कदम उठाने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि, ये महाराष्ट्र में भाजपा-सेना की नई सरकार के आते ही बड़ा कदम है। इस आदेश के जारी होने से आज हजारों किसानों के चेहरों पर खुशी है। इस खुशी को बरकरार रखने हम सदैव अन्नदाताओं के साथ उनके सुख-दुख में शामिल रहेंगे।

७० वर्षीय निराधार महिला खुले में रहने को मजबूर

ग्राम का सभा मंडप बना आश्रय स्थल, ग्रापं की लापरवाही से आवास योजना से वंचित

बुलंद संवाददाता गोरेगांव - गोंदिया जिले के गोरेगांव तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम मोहाडी में पंचायत प्रशासन का एक लापरवाही पूर्ण मामला सामने आया है। जिसमें ग्राम की 70 वर्षीय आदिवासी निराधार महिला चंदा रतिराम येरखडे को आवास योजना का लाभ नहीं मिलने से गत 1 माह से भारी बारिश में महिला को खुले में रहकर ग्राम के सभा मंडप को अपना आश्रय स्थल बनाना पड़ा है।

गौरतलब है कि गोंदिया जिले में आए दिन स्थानीय प्रशासन व ग्राम पंचायतों की लापरवाही के मामले सामने आते रहते हैं। इसी के तहत जिले के गोरेगांव तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम मोहाडी की एक 70 वर्षीय निराश्रित बुजुर्ग महिला चंदा रतिराम येरखडे को भुगतना पड़ रहा है। विशेष यह है कि उक्त बुजुर्ग महिला निराधार है व उसके परिवार में कोई नहीं है तथा वे अकेली ही रहती है। जिसका पुराना मकान जर्जर अवस्था में होकर गिर चुका है। जिसके लिए ग्राम पंचायत में आवास योजना के लिए आवेदन किया गया है, किंतु ग्राम पंचायत प्रशासन द्वारा लापरवाही पूर्ण तरीका अपनाते हुए महिला को आवास योजना से वंचित रखा गया है। जिसके चलते महिला को भारी बारिश के में खुले में अपना जीवन गुजारना पड़ रहा है। फिलहाल गांव के सभा मंडप में महिला द्वारा अपना आश्रय स्थल बनाया है। विशेष यही की सभा मंडप में विद्युत न होने से मच्छरों का प्रकोप व बारिश के दौरान जहरीले जीव जंतु का खतरा बना हुआ है।

ग्राम पंचायत की लापरवाही का मामला यह है कि ग्राम के अनेक संपन्न परिवारों को दो-दो आवास योजना का लाभ दिया गया है। किंतु एक निराश्रित आदिवासी 70 वर्षीय बुजुर्ग महिला को आवास योजना से वंचित रखने वाली ग्राम पंचायत के पदाधिकारियों पर कार्रवाई कर आदिवासी निराधार महिला को आवास योजना का लाभ दिलाने के लिए जनप्रतिनिधि व संबंधित प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा ध्यान दिया जाएगा क्या? इस पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है।

वानर का गोली मारकर शिकार, ग्राम तेढवा का मामला

वन विभाग ने शव को भेजा फॉरेंसिक जांच के लिए

बुलंद गोंदिया - जिले में वन्यजीवों के शिकार के मामले अनेकों बार सामने आते हैं। लेकिन इस बार एक वानर को गोली मारने का मामला सामने आया है। गोंदिया वन विभाग के अंतर्गत आनेवाले ग्राम तेढवा में 13 जुलाई की सुबह 8 से 9 बजे के दौरान एक वानर को गोली मारकर शिकार किया गया। जिसके शव को दोपहर के पश्चात वन विभाग द्वारा कब्जे में लेकर मामले की गंभीरता को देखते हुए मृतक वानर के शव को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा गया तथा शव विच्छेदन किया गया। शव विच्छेदन में यह बात सामने आयी कि छर्रे वाली बंदूक से वानर का शिकार किया गया है। उपरोक्त मामले में वन विभाग द्वारा मामले की जांच शुरु की गई है।

वन विभाग के कर्मचारियों की लापरवाही

ग्राम तेढवा में वानर को गोली मारकर हत्या किए जाने का मामला सामने आने के पश्चात ग्राम के पुलिस पाटिल द्वारा इसकी जानकारी संबंधित क्षेत्र के बीट गार्ड को दी गई। लेकिन उसने लापरवाही बरतते हुए इस मामले की जानकारी वरिष्ठ अधिकारियों को

देना उचित नहीं समझ। जब यह घटना बुलंद गोंदिया के सामने आयी तो इसकी जानकारी गोंदिया वन विभाग के वन परीक्षेत्र अधिकारी को दी गई। तब तत्काल एक दल घटनास्थल पर पहुंचकर मृतक वानर के शव को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा गया है।

ग्राम तेढवामें चल रही चर्चा के अनुसार इस प्रकार वानर को छर्रे वाली बंदूक से मारने के मामले पहले भी सामने आए थे। किंतु उपरोक्त मामलों की शिकायत दर्ज नहीं हुई। क्योंकि मामले में गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति के शामिल होने की संभावना जताई जा रही है। ग्राम में एक ही परिवार के पास छर्रे वाली बंदूक बताई जा रही है।

पुलिस विभाग भी करें मामले की गहराई से जांच

गोंदिया जिले में आग्नेय शस्त्र बंदूके व छर्रे वाली बंदूक के बड़े पैमाने पर होने की संभावना है। जिससे आए दिन इस प्रकार के हादसे होते रहते हैं। मनुष्य पर हमले के साथ-साथ वन्यजीवों का भी शिकार किया जा रहा है। हाल ही में दवनीवाड़ा पुलिस थाना क्षेत्र में बड़ी संख्या में तलवारों का जखीरा पकड़ा गया था। इस मामले में भी पुलिस विभाग द्वारा गहराई से जांच करने पर और अधिक गंभीर खुलासे हो सकता है।

फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जांच शुरु

मृतक वानर के शव का शव विच्छेदन करवा कर फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा गया है। मामले की कड़ाई से जांच की जा रही है। जल्द ही इस शिकार प्रकरण में संबंधित दोषियों पर वन विभाग के अधिनियमों के तहत कार्यवाही की जाएंगी।

- आकांक्षा भालेकर, वन परीक्षेत्र अधिकारी
वन विभाग गोंदिया

संपादकीय

महंगाई का ईंधन

कई सर्वेक्षणों से स्पष्ट है कि गरीब परिवारों के लोग फिर से पारंपरिक ईंधन का इस्तेमाल करने लगे हैं।

आम आदमी की रसोई से रौनक गायब है। खाने-पीने की वस्तुओं के दाम ट्टपर ही चढ़ते जा रहे हैं। उसके ट्टपर रसोई गैस की कीमत में बढ़ोतरी से दोहरी मार पड़ रही है। इस साल मार्च से लेकर अब तक रसोई गैस के दाम चार बार बढ़ चुके हैं। इस तरह पिछले एक साल में घरेलू रसोई गैस के सिलेंडर की कीमत दो सौ चौवालीस रुपए तक बढ़ चुकी है। तेल कंपनियों को यह बढ़ोतरी अंतरराष्ट्रीय बाजार में ईंधन की चढ़ती कीमतों के मद्देनजर करनी पड़ी है। आगे भी इसमें कमी के कोई आसार नजर नहीं आ रहे।

इसी तरह पेट्रोल और डीजल के दाम ट्टपर चढ़ने शुरु हुए और हाहाकार मचने लगा तो केंद्र और राज्य सरकारों ने उनके करों में कटौती कर कुछ राहत देने की कोशिश की। ईंधन की बढ़ती कीमतों का असर तमाम वस्तुओं पर पड़ता है, जिसके चलते महंगाई पर काबू पाना कठिन बना रहता है। इस समय खुदरा से अधिक थोक महंगाई बेकाबू है। इसलिए सरकार की चिंता स्वाभाविक है। महंगाई रोकने के लिए केंद्र ने कुछ राहत के कदम भी उठाए हैं, जैसे कुछ वस्तुओं के निर्यात पर रोक लगाई है, कुछ के आयात पर शुल्क घटाए हैं, अभी खाद्य तेलों पर दस रुपए की कटौती करने को कहा है। मगर ये कदम फौरी राहत भर दे सकते हैं।

रसोई गैस पर सबसिडी समाप्त कर दी गई है। यह केवल उज्ज्वला योजना का लाभ उठाने वाले लोगों को ही दी जाती है। इस तरह मध्यवर्गीय परिवारों को रसोई का खर्च अब भारी पड़ने लगा है। उज्ज्वला योजना के तहत गरीब परिवारों को मुफ्त सिलेंडर जरुर बांटे गए थे, चुनाव के वक्त कुछ सरकारें त्योहारों पर मुयत गैस देने की घोषणा भी करती देखी गईं, मगर इससे गरीब की रसोई में रौनक लौटती नजर नहीं आ रही। जिन लोगों को उज्ज्वला योजना के तहत सिलेंडर बांटे गए थे, उनके पास उसमें गैस भराने के पैसे नहीं हैं।

कई सर्वेक्षणों से स्पष्ट है कि गरीब परिवारों के लोग फिर से पारंपरिक ईंधन का इस्तेमाल करने लगे हैं। खुद सरकार का दावा है कि बहुत सारे परिवार मुफ्त राशन योजना पर निर्भर हैं। ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे सिलेंडर में गैस कहां से भराएंगे। यानी गैस की खपत भी ज्यादा नहीं बढ़ी है, फिर भी कीमत पर अंकुश लगाना चुनौती बना हुआ है।

हालांकि सरकार ने व्यावसायिक सिलेंडर के दाम बढ़ाने से बचने का प्रयास किया है, मगर वह पहले ही इतना बढ़ चुका है कि उससे महंगाई रोकने में बहुत मदद नहीं मिल रही। खाने-पीने का कारोबार करने वालों के सामने वस्तुओं की कीमत बढ़ाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इस तरह उनके ग्राहकों की संख्या पर असर पड़ रहा है।

पहले ही लोग बेरोजगारी और मंदी की मार झेल रहे हैं, जिसके चलते उनकी कमाई नहीं बढ़ पा रही। उस पर महंगाई की मार जीना दूभर कर रही है। समस्या केवल अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल और ईंधन के दाम में बढ़ोतरी से नहीं है। अर्थव्यवस्था को संभालने वाले सभी स्तंभ कमजोर हो चले हैं। अगर लोगों की कमाई बढ़ेगी, तभी खपत भी बढ़ेगी। खपत नहीं बढ़ेगी, तो थोक महंगाई चुनौती बनी रहेगी। यानी भारी उद्योगों के सामने संकट बना रहेगा, जिनके बल पर अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने का प्रयास किया जाता है। इसलिए तदर्थ के बजाय स्थायी उपायों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश होनी चाहिए।

ईद अल-अज़हा

बकरीद (ईद-अल-अज़हा) मुसलमान लोगों का पवित्र त्यौहार है। हजरत इब्राहिम द्वारा अल्लाह के आदेश के पालन में अपने लड़के की बली चढ़ाने की घटना के यादगार के रुप में मनाया जाता है, लडके की बली देने को तैयार इब्राहीम के बदले अंतिम समय पर अल्लाह के भेजे जिबरील ने भेड़ का बच्चा रख दिया और इब्राहीम के लडके की जान बच गयी। यी मुसलमानों का सबसे पवित्र माना जाने वाला त्यौहार है।

इस्लामी कैलेंडर के मुताबिक यह पर्व जिलहिज के महीना की दसवीं तिथी को मनाया जाता है। इस दिन मुसलमान लोग किसी जानवर की बली चढाकर उसका तिसरा हिस्सा गरीब और वंचित लोग को, इतना ही हिस्सा नाते-रिश्तेदारों को बाँटते है। और बाकी बचा तिसरा हिस्सा खुद रखते हैं।

ईद अल-अज़हा या कुरबानी की ईद (ईद-उल-अज़हा अथवा ईद-उल-अद्ज़हा - जिसका मतलब कुरबानी की ईद) इस्लाम धर्म में विश्वास करने वाले लोगों का एक प्रमुख त्यौहार है। रमजान के पवित्र महीने की समाप्ति के लगभग 70 दिनों बाद इसे मनाया जाता है। इस्लामिक मान्यता के अनुसार हज़रत इब्राहिम अपने पुत्र हज़रत इस्माइल को इसी दिन खुदा के हुक्म पर खुदा कि राह में कुर्बान करने जा रहे थे, तो अल्लाह ने उसके पुत्र को जीवनदान दे दिया जिसकी याद में यह पर्व मनाया जाता है। अरबी भाषा में बक़र का अर्थ है गाय। लेकिन इधर हिंदी उर्दू भाषा के बकरी-बकरा से इसका नाम जुड़ा है, अर्थात इधर के देशों में बकरे की कुर्बानी के कारण असल नाम से बिगड़कर आज भारत, पाकिस्तान व बांग्ला देश में यह शबकरा ईदश से ज्यादा विख्यात हैं। ईद-ए-कुर्बां का मतलब है बलिदान की भावना। अरबी में क़र्ब नजदीकी या बहुत पास रहने को कहते हैं मतलब इस मौके पर अल्लाह् इंसान के बहुत करीब हो जाता है। कुर्बानी उस पशु के ज़िबह करने को कहते हैं जिसे 10, 11, 12 या 14 ज़िलहिज्ज (हज का महीना) को खुदा को खुश करने के लिए ज़िबह किया जाता है। कुरान में लिखा हैरु हमने तुम्हें हौज़-ए-कौसा दिया तो तुम अपने अल्लाह के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो।

इस ईद को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे-

ईदुल अज़हा, ईद अल-अज़हा, ईद उल-अज़हा, ईद अल-अधा, ईदुज़ जुहा

त्याग का उत्थान

कुरबानी का त्यौहार हिजरी के आखिरी महीने जु अल-हज्जा में मनाया जाता है। पूरी दुनिया के मुसलमान इस महीने में मक्का सट्टदी अरब में एकत्रित होकर हज मनाते है। ईद उल अजहा भी इसी दिन मनाई जाती है। वास्तव में यह हज की एक अंशीय अदायगी और मुसलमानों के भाव का दिन है। दुनिया भर के मुसलमानों का एक समूह मक्का में हज करता है बाकी मुसलमानों के अंतरराष्ट्रीय भाव का दिन बन जाता है। ईद उल अजहा का अक्षरशरु अर्थ त्याग वाली ईद है इस दिन जानवर की कुर्बानी देना एक प्रकार की प्रतीकात्मक कुर्बानी है।

हज और उसके साथ जुड़ी हुई पद्धति हजरत इब्राहीम और उनके परिवार द्वारा किए गए कार्यों को प्रतीकात्मक तौर पर दोहराने का नाम है। हजरत इब्राहीम के परिवार में उनकी पत्नी हाजरा और पुत्र इस्माइल थे। मान्यता है कि हजरत इब्राहीम ने एक स्वप्न देखा था जिसमें वह अपने पुत्र इस्माइल की कुर्बानी दे रहे थे हजरत इब्राहीम अपने दस वर्षीय पुत्र इस्माइल को ईश्वर की राह पर कुर्बान करने निकल पड़े। पुस्तकों में आता है कि ईश्वर ने अपने फरिश्तों को भेजकर इस्माइल की जगह एक जानवर की कुर्बानी करने को कहा। दरअसल इब्राहीम से जो असल कुर्बानी मांगी गई थी वह थी उनकी खुद की थी अर्थात ये कि खुद को भूल जाओ, मतलब अपने सुख-आराम को भूलकर खुद को मानवताध्इंसानियत की सेवा में पूरी तरह से लगा दो। तब उन्होनें अपने पुत्र इस्माइल और उनकी मां हाजरा को मक्का में बसाने का निर्णल लिया। लेकिन मक्का उस समय रेगिस्तान के सिवा कुछ न था। उन्हें मक्का में बसाकर वे खुद मानव सेवा के लिए निकल गये।

इस तरह एक रेगिस्तान में बसना उनकी और उनके पूरे परिवार की कुर्बानी थी जब इस्माइल बड़े हुए तो उधर से एक काफिला (कारवां) गुजरा और इस्माइल का विवाह उस काफिले (कारवां) में से एक युवती से करा दिया गया फिर प्रारम्भ हुआ एक वंश जिसे इतिहास में इश्माइलिट्स, या वनु इस्माइल के नाम से जाना गया। हजरत मुहम्मद साहब का इसी वंश में जन्म हुआ था। ईद उल अजहा के दो संदेश है पहला परिवार के बड़े सदस्य को स्वार्थ के परे देखना चाहिए और खुद को मानव उत्थान के लिए लगाना चाहिए ईद उल अजहा यह याद दिलाता है कि कैसे एक छोटे से परिवार में एक नया अध्याय लिखा गया।

ईद की नमाज

मस्जिद में भक्त ईद अल-अधा प्रार्थना करते हैं। ईद अल-अधा की प्रार्थना किसी भी समय की जाती है जब सूरज पूरी तरह से जुहर के प्रवेश से ठीक पहले उठता है, 10 वीं तारीख को धु अल-हिजाह पर। एक बल की घटना (उदाहरण के लिए प्राकृतिक आपदा) की स्थिति में, प्रार्थना को धु-अल-हिजाह की 11 वीं और फिर धु-अल-हिज्जाह की 12 वीं तक देरी हो सकती है।

सामूहिक तौर पर ईद की नमाज़ अदा की जानी चाहिए। प्रार्थना मण्डली में महिलाओं की भागीदारी समुदाय से समुदाय में भिन्न होती है। इसमें दो राकात (इकाइयाँ) शामिल हैं, जिसमें पहली राकात में सात तक्बीर और दूसरी राकात में पाँच तकबीरें हैं। शिया मुसलमानों के लिए, सलात अल-ईद पाँच दैनिक विहित प्रार्थनाओं से अलग है जिसमें कोई ईशान (नमाज़ अदा करना) या इक़ामा (कॉल) दो ईद की नमाज़ के लिए स्पष्ट नहीं है। सलाम (प्रार्थना) के बाद इमाम द्वारा खुतबा, या उपदेश दिया जाता है।

प्रार्थनाओं और उपदेशों के समापन पर, मुसलमान एक दूसरे के साथ गले मिलते हैं और एक दूसरे को बधाई देते हैं (ईद मुबारक), उपहार देते हैं और एक दूसरे से मिलते हैं। बहुत से मुसलमान अपने ईद त्योहारों पर अपने गैर-मुस्लिम दोस्तों, पड़ोसियों, सहकर्मियों और सहपाठियों को इस्लाम और मुस्लिम संस्कृति के बारे में बेहतर तरीके से परिचित कराने के लिए इस अवसर पर आमंत्रित करते हैं।

परंपराऐं और प्रथाएँ

ईद अल-अधा के दौरान, लोगों के बीच मांस वितरित करना, पहले दिन ईद की नमाज से पहले तकबीर का जाप करना और ईद के तीन दिनों के दौरान प्रार्थना के बाद, इस महत्वपूर्ण इस्लामिक त्योहार के आवश्यक हिस्से माने जाते हैं। तकबीर में शामिल हैं-

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर
ला इलाहा इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर
अल्लाहू अकबर, व लिल्लाहिल हम्द

पुरुषों, महिलाओं और बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे ईदगाह या मस्जिद नामक एक खुली वक्फ (रोक) मैदान में एक बड़ी सभा में ईद की नमाज़ अदा करने के लिए अपने बेहतरीन कपड़ों में तैयार हों। संपन्न मुसलमान जो इसे खरीद सकते हैं वे अपने सबसे अच्छे हलाल घरेलू पशुओं (आमतौर पर एक गाय, लेकिन इस क्षेत्र के आधार पर ऊंट, बकरी, या भेड़ भी हो सकते हैं) को इब्राहीम की इच्छा के प्रतीक के रुप में अपने इकलौते बेटे की बलि चढ़ा सकते हैं। बलिदान किए गए जानवर, जिन्हें अधिया कहा जाता है, जिसे फारस-अरबी शब्द कुर्बानी से भी जाना जाता है, उन्हें कुछ निश्चित आयु और गुणवत्ता मानकों को पूरा करना पड़ता है या फिर पशु को अस्वीकार्य बलिदान माना जाता है। अकेले पाकिस्तान में 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की लागत वाले लगभग दस मिलियन जानवरों की ईद के दिन कुर्बानी कर दी जाती है।

कुर्बानी वाले जानवर के मांस को तीन भागों में विभाजित किया जाना पसंद किया जाता है। परिवार में एक तिहाई हिस्सा बरकरार रहता हैय और एक तिहाई रिश्तेदारों, दोस्तों, और पड़ोसियों को दिया जाता हैय और शेष तीसरा हिस्सा गरीबों और जरुरतमंदों को दिया जाता है।

मुसलमान अपने नए या सबसे अच्छे कपड़े पहनते हैं। महिलाएं विशेष पकवानों को पकाती हैं, जिसमें मैमौल (शॉर्टब्रेड कुकीज) भी शामिल हैं। वे परिवार और दोस्तों के साथ इकट्ठा होते हैं।

साभार : विकिपीडिया

विश्व जनसंख्या दिवस

विश्व जनसंख्या दिवस प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 11 जुलाई को मनाया जायेगा। विश्व जनसंख्या दिवस मनाने का सबसे बड़ा कारण है लोगों को जागरुक करना है। विश्व में बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए विश्व जनसंख्या दिवस को मनाने की घोषणा की गयी थी। 22 जुलाई 2022 को प्रत्येक वर्ष की तरह विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जायेगा। इस बार 30 वां विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जा रहा है।

जनसंख्या का अर्थ होता है कि किसी सीमित क्षेत्र में रहने वाले लोगों का घनत्व होता है। घनत्व एक वर्ग किलोमीटर के अन्दर रहने वाले लोगों को दर्शाता है। जब किसी विशेष क्षेत्र की जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगती है, तो उसे उस क्षेत्र का जनसंख्या वृद्धि कहते है। जब यह जनसंख्या पूरे देश या विश्व में बढ़ने लगती है। इसे देश या विश्व की जनसंख्या वृद्धि कहते है। जब जनसंख्या वृद्धि को प्रतिशत देखी जाती है तो उसे जनसंख्या वृद्धि दर करते है। जैसे कि विश्व की जनसंख्या वृद्धि दर 1.1 प्रतिशत है।

इसी प्रकार भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत है। किसी देश की जनसंख्या वृद्धि का अनुमान आप ऐसे लगा सकते है। जब किसी क्षेत्र में युवाओं को नौकरी के लिए भटकने लगे या किसी परिवार को दो वक्त की रोटी के लिए काफी कठिनाई का सामना करना पड़े तो निश्चित ही उस देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ने लगी है।

प्रत्येक वर्ष 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाता है। अगर मैं अप्रैल 2021 डेटा के अनुसार विश्व की जनसंख्या 8.2 अरब है। जिसमें 1,38,35,41,278 के साथ चीन पहले स्थान पर है। वही भारत 131 करोड़ के साथ दूसरे स्थान पर है। किन्तु भारत की जनगणना 2011 में हुई धी। उस समय भारत की जनसंख्या 121 करोड़ थी। लेकिन कोरोना के कारण 2021 की जनगणना अभी शुरु नहीं हुई।

भारत की जनसंख्या का अनुमान वृद्धि दर के आधार पर लगाया जा रहा है। भारत का भी जनसंख्या विस्फोट में महत्वपूर्ण योगदान है। विश्व को जनसंख्या नियंत्रण कानून लाना चाहिए। जिससे देश में जनसंख्या नियंत्रित हो सके।

इतिहास

विश्व जनसंख्या दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य विश्व में बढ़ती आबादी के प्रति लोगों को जागरुक करना है। वर्तमान में बढ़ती आबादी के दुष्प्रभावों और इससे अन्य मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित करना महत्वपूर्ण होता है। इसी दिन को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने 1989 को जनसंख्या दिवस के रुप में मनाने की घोषणा की।

इस दिन का निर्धारण संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के तत्कालीन गवर्निंग काउंसिल द्वारा किया गया था। 11 जुलाई को जनसंख्या दिवस मनाने का सुझाव डॉक्टर केसी जैक्रियाह ने दिया था। उन्होंने 11 जुलाई 1987 को विश्व की जनसंख्या 5 बिलियन तक पहुंचने का आकड़ा बताया था।

उस समय केसी जैक्रियाह वर्ल्ड बैंक में सीनियर डेमोग्राफर पर कार्यरत थे। इस पर निर्धारण संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने जाँच और विचार करके दो वर्ष बाद

यानि कि 11 जुलाई 1989 को विश्व जनसंख्या दिवस मनाने की घोषणा की। 11 जुलाई 1989 को पहला विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया।

1987 तक विश्व की आबादी 5 बिलियन पहुंचने के बाद संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने इस दिन को अवकाश घोषित करने की घोषणा की। जिससे लोगों को जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरुक किया जा सके। तथा इसके दुष्प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सके। इसी कारण 1989 से विश्व जनसंख्या दिवस मनाना शुरु किया गया।

उद्देश्य

लगभग तीन दशकों से मनाये जाने वाले दिवस का उद्देश्य विश्व जनसंख्या जन्म दर को नियंत्रित करना तथा लोगों को इसके प्रति जागरुक करना है। जनसंख्या वृद्धि जैसी अनियमिता के प्रति लोगों सजग करना है।

वर्तमान समय में विश्व की जनसंख्या लगभग 8.2 अरब के आस-पास है। यह संख्या 2016 में लगभग 7.3 अरब के आस-पास थी। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार यह बहुत तेजी से बढ़ रही है। प्रतिवर्ष इसमें 8.3 करोड़ या 1.1 प्रतिशत की दर से बढ़ती जा रही है अगर विश्व की जनसंख्या इसी रयतार से बढ़ती रही तो 2030 तक 8.6 अरब तक तक हो जायेगी और 2050 तक 9.8 अरब तक हो जायेगी, 2100 तक 11.2 अरब तक हो सकती है।

भारत की जनसंख्या वृद्धि के कारण

कहा जाता है कि किसी भी चीज की अति बुरी होती है। फिर चाहे वह किसी देश आर्थिक समस्या हो या जनसंख्या की समस्या दोनों ही किसी देश के लिए घातक होती है। अगर हम बात भारत की करते है तो भारत की जनसंख्या का अंदाजा इस बात से कर सकते है कि भारत की जनसंख्या विश्व की दूसरे स्थान पर है। कहा जा रहा है कि वह दिन दूर नहीं है जब भारत चीन को पीछे छोड़ कर दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन जायेगा।

भारत में बढ़ती आबादी का मुख्य कारण लोगों में अशिक्षा और अंधविश्वास है। कुछ लोग अपने परिवार को धन मानते है और कहते है कि अगर घर में लोग ज्यादा होंगे तो घर की आमदनी भी ज्यादा होगी। किन्तु ऐसा नहीं कि सभी लोग अच्छी शिक्षा और अच्छी नौकरी प्राप्त कर सके। जितने लोग होंगे उतना ज्यादा खर्च भी बढ़ेगा। जैसे कि किसी माता-पिता के 5 बच्चे है तो क्या वे अपने सभी बच्चे को अच्छी शिक्षा या सुविधा दे सके। लेकिन इसके विपरीत किसी माता-पिता के एक या दो बच्चे हो तो वह अपने बच्चे की अच्छी परवरिश कर सकते है। और उन्हें अच्छी शिक्षा भी दे सकते है।

भारत में अंधविश्वास इतना ज्यादा है कि लोग बच्चे को भगवान की देन मानते है, किन्तु अगर ये लोग शिक्षित हो तो इन्हें इसकी सच्चाई का पता चल सके। अगर हम इसे भगवान की देन न समझकर जनसंख्या नियंत्रण पर कार्य करें तो देश की जनसंख्या नियंत्रित हो सकती है।

जनसंख्या नियंत्रण के उपाय

हमारे देश में कुछ बाते केवल कागजी होती है उन्हें जमीनी स्तर तक लाया ही नहीं जाता है। हमारे देश में सेक्स के बारे में कोई बात नहीं करना चाहते है इस पर कोई चर्चा नहीं की जाती है। और लोग इस बारे में बात करने से कतराते है। भारत सरकार और राज्य सरकार को एक ऐसा कानून लाना चाहिए जिसे न सिर्फ कागज पर हो बल्कि जमीनी स्तर पर हो। जनसंख्या नियंत्रण का बारे में लोगों को जागरुक करें, विज्ञापन निकाले, इस काम के लिए स्थानीय सरकार जैसे ग्राम पंचायतें, ब्लॉक स्तर तथा उच्च अधिकारियों को निर्देश जारी किया जाये। जिससे लोगों में जागरुकता बढ़े।

- भारत सरकार को एक कठोर कानून बनाना चाहिए, कुछ पुराने कानूनों में बदलाव होना चाहिए जैसे कि लड़की की शादी 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर देनी चाहिए। तथा पुरुषों की शादी 21 वर्ष से बढ़ाकर 25 वर्ष कर देनी चाहिए।
- जिस स्थान या राज्य के किसी भी क्षेत्र में जहां 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की की शादी हो रही हो वहां पर नजर रखनी चाहिए तथा जो लोग इस शादी को अंजाम दे रहे है उन्हें कड़ी सज़ा दी जानी चाहिए।
- परिवार कल्याण जैसी योजनाओं का विज्ञापन हो लोगों को इसके बारे में जानकारी दी जाये।
- विख्यात लोगों को भी इसमें शामिल किया जाये जिससे लोगों में जागरुकता बढ़े।
- राज्य सरकारों को ऐसा कानून लाना चाहिए कि जिनके दो से अधिक बच्चे है उन्हें सरकारी सुविधाओं के लाभ से वंचित रखा जायेगा।

भारत के लगभग 12 राज्य ऐसे कानून ला चुके है कि जिनके दो बच्चे से अधिक है उन्हें सरकारी सुविधा नहीं दी जायेगी। उत्तर प्रदेश सरकार भी इस कानून को बहुत जल्द ही लागू कर देगी।

साभार : विकिपीडिया

गुरु-पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा उन सभी आध्यात्मिक और अकादमिक गुरुजनों को समर्पित परम्परा है जिन्होंने कर्म योग आधारित व्यक्तित्व विकास और प्रबुद्ध करने, बहुत कम अथवा बिना किसी मौद्रिक खर्चे के अपनी बुद्धिमता को साझा करने के लिए तैयार हों। इसको भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दू, जैन और बोद्ध धर्म के अनुयायी उत्सव के रुप में मनाते हैं। यह पर्व हिन्दू, बौद्ध और जैन अपने आध्यात्मिक शिक्षकों / अधिनायकों के सम्मान और उन्हें अपनी कृतज्ञता दिखाने के रुप में मनाया जाता है। यह पर्व हिन्दू पंचांग के हिन्दू माह आषाढ़ की पूर्णिमा (जून-जुलाई) मनाया जाता है। इस उत्सव को महात्मा गांधी ने अपने आध्यात्मिक गुरु श्रीमद राजचन्द्र सम्मान देने के लिए पुनर्जीवित किया। ऐसा भी माना जाता है कि व्यास पूर्णिमा वेदव्यास के जन्मदिन के रुप में मनाया जाता है।

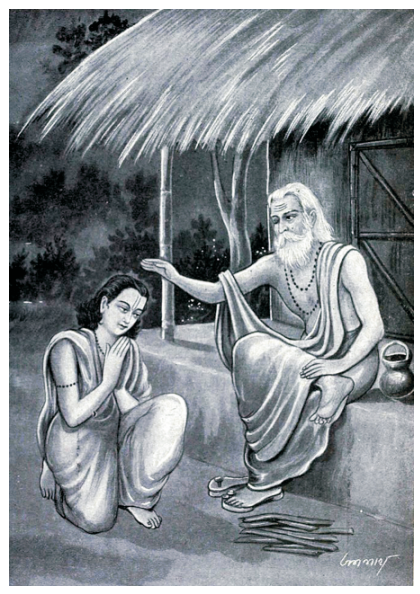

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु पूजा का विधान है। गुरु पूर्णिमा वर्षा क्रृतु के आरम्भ में आती है। इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं। न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी। इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं। जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु-चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है।

यह दिन महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्मदिन भी है। वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। उनका एक नाम वेद व्यास भी है। उन्हें आदिगुरु कहा जाता है और उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है। भक्तिकाल के संत घीसादास का भी जन्म इसी दिन हुआ था वे कबीरदास के शिष्य थे।

शास्त्रों में गु का अर्थ बताया गया है- अंधकार या मूल अज्ञान और का अर्थ किया गया है- उसका निरोधक। गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि वह अज्ञान तिमिर का ज्ञानांजन-शलाका से निवारण कर देता है। अर्थात अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को श्गुरुश कहा जाता है।

अज्ञान तिमिरांधश्च ज्ञानांजन शलाकया, चक्षुन्मीलितम तस्मै श्री गुरुवै नम:।

गुरु तथा देवता में समानता के लिए एक श्लोक में कहा गया है कि जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है वैसी ही गुरु के लिए भी। बल्कि सद्गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है। गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन गुरु पूजा का विधान है। गुरु पूर्णिमा वर्षा क्रृतु के आरम्भ में आती है। इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं। न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी। इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं। जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु-चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है।

अवांछित गर्भधारण के लिए नि:शुल्क अंतराल इंजेक्शन का करे उपयोग - डॉ.नितिन वानखेड़े

११ जुलाई विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर विशेष लेख

बुलंद गोंदिया - दुनिया भर में हर साल 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के रुप में मनाया जाता है। इस अवसर पर जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान किया जाता है और उन पर विचार किया जाता है। 1989 में, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के कार्यकारी बोर्ड ने 11 जुलाई, 1987 को अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या दिवस के रुप में चित्रित करने का फैसला किया, जो दुनिया की 5 अरब से अधिक की आबादी की याद में मनाया जाता है। इस दिन का औपचारिक रुप से उद्घाटन संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दिसंबर 1990 में संकल्प 45/216 को अपनाने के साथ किया गया था। 11 जुलाई 1990 को पहली बार 90 से अधिक देशों में इस दिवस का आयोजन किया गया था।

बढ़ती वैश्विक आबादी के दुष्प्रभावों के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए हर साल 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस के रुप में मनाया जाता है। इस दिन परिवार नियोजन, गरीबी, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य, नागरिक अधिकार और अन्य मुद्दों पर चर्चा की जाती है।जनसंख्या को देश की ताकत कहा जाता है। जनसंख्या का आकार किसी देश के विकास और अन्य चीजों को भी प्रभावित करता है। यदि किसी देश की जनसंख्या अधिक है तो उस देश का विकास धीमा होता है। ऐसे देशों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बढ़ती हुई जनसंख्या को जीवित रहने से लेकर प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग तक कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

तेजी से बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए 1952 से हमारे देश में राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम लागू किया गया है। पालना बंद करने के लिए महिला और पुरुष नसबंदी सर्जरी उपलब्ध हैं, जिले में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के साथ-साथ ग्रामीण अस्पतालों में नसबंदी सर्जरी शिविर आयोजित किए जाते हैं और सही लाभार्थियों को स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा प्रेरित और संचालित किया जाता है।

राज्य जनसंख्या नीति

जन्म दर को कम करने के लिए परिवार कल्याण कार्यक्रम का क्रियान्वयन गुणवत्तापूर्ण ढंग से करने की आवश्यकता है। कम उम्र में विवाह, संतान चाहना, दो बच्चों के बीच कम दूरी आदि पर विशेष स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से जागरुकता फैलाई जाती है।

परिवार नियोजन उपकरणों का उपयोग

गर्भावस्था को लम्बा करने के लिए उपयोग किया जाता है। दो बच्चों के बीच उचित दूरी बनाए रखने के लिए जन्म नियंत्रण उपकरणों का उपयोग किया जाता है। गर्भावस्था के बाद आगे गर्भधारण को रोकने के लिए ऐसा कई बार होता है। प्रसव के बाद मां की उचित देखभाल जरुरी है। प्रसव के बाद एक प्रशिक्षित व्यक्ति (डॉक्टर, नर्स, प्रशिक्षित दाई) द्वारा नियमित जांच की आवश्यकता होती है। पहले 8 से 10 दिन रोजाना जांच करानी चाहिए। उसके बाद हर हफ्ते 6 हयते तक चेक करना जरुरी है। इसके बाद, हर महीने छह महीने तक निरीक्षण की आवश्यकता होती है।

प्रसवोत्तर अवधि के दौरान जननांग दाद को रोकने के लिए साफ कपड़े और व्यक्तिगत स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रसव के बाद जितनी जल्दी हो सके स्तनपान शुरु कर देना चाहिए। यह मां और बच्चे दोनों के लिए फायदेमंद है। यदि आपको प्रसव के तुरंत बाद या बाद में अत्यधिक रक्तस्राव महसूस होता है, तो आपको तुरंत चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। यदि आपको तेज बुखार, आक्षेप, चेतना की हानि जैसे कोई लक्षण हैं, तो आपको तुरंत एक डॉक्टर को देखने की जरुरत है। प्रसवोत्तर अवधि के दौरान पर्याप्त वर्गाकार और पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है। और इसे माता को देना चाहिए।

एनीमिया से बचाव के लिए आयरन की गोलियां 100 दिन तक खानी चाहिए। 1 से 2 महीने के बाद पिछले सभी काम धीरे-धीरे शुरु करें। प्रसवोत्तर अवधि में मां की उचित देखभाल करके निश्चित रुप से मातृ मृत्यु दर को कम किया जा सकता है।

पालने को लम्बा करने या रोकने के लिए सही सलाह देने के लिए माँ को मनाने की जरुरत है। परिवार नियोजन सर्जरी पुरुषों और महिलाओं दोनों पर की जा सकती है।

पालना क्यों बढ़ाया जाना चाहिए?

अधिक बच्चे होना दंपति और परिवार दोनों के लिए हानिकारक हो सकता है। लगातार गर्भधारण से बच्चे की मां कमजोर हो जाती है। प्रत्येक बच्चे की देखभाल के लिए उसके पास समय, धन और ऊर्जा का अभाव है।

एक बड़े परिवार में पोषण, बच्चों की शिक्षा, भोजन और आश्रय बहुत महंगा होता है। गर्भावस्था के तनाव के कारण होने वाला रक्ताल्पता दूर होने और उसका रक्ताल्पता ठीक नहीं होने से पहले दिन बीतने के साथ मां को बहुत कष्ट होता है। यदि दूसरा बच्चा जल्दी पैदा नहीं होता है, तो पहले बच्चे की अच्छी परवरिश की जा सकती है। इसकी अच्छी तरह से देखभाल की जा सकती है।

किस को पालना बढ़ाना चाहिए

15 से 40 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं को पालना बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। सभी नवविवाहितों, एक बच्चे, दो या दो से अधिक बच्चों के लिए पालना बढ़ाने की सलाह दी जाती है।

पालने को लंबा करने के तरीके

पालने को लंबा करने के कई तरीके हैं। दो बच्चों के बीच कम से कम तीन साल का अंतर रखने के लिए सभी जोड़ों को पालना बढ़ाने पर विचार करना चाहिए। इसके लिए निम्न विधि का प्रयोग किया जा सकता है। गर्भनिरोध/कंडोम, कॉपर/कॉपर टी, बर्थ कंट्रोल पिल्स/क्रैडल, एक्सटेंशन पिल्स/गर्भनिरोधक गोलियां आदि।

कंडोम

इसका उपयोग करना आसान है। लेकिन कई पुरुष इसका इस्तेमाल करना पसंद नहीं करते हैं। क्योंकि कभी-कभी यह टूट जाता है। तो यह बहुत सुरक्षित महसूस नहीं करता है। यदि यह फट जाता है, तो वीर्य से शुक्राणु महिला की योनि में प्रवेश कर जाता है। कंडोम बाजार में आसानी से मिल जाता है। इसका उपयोग परिवार नियोजन के साथ-साथ यौन संचारित संक्रमणों की रोकथाम के लिए भी किया जाता है।

कॉपर टी

ये पालने महिला की योनि में डाले जाते हैं। इसके लिए डॉक्टर या नर्स की आवश्यकता होती है। लेकिन एक बार इंस्टाल हो जाने के बाद, यह ज्यादा चोट नहीं पहुंचाता है। कभी-कभी यह पहली बार में थोड़ा परेशान करने वाला हो सकता है। मासिक धर्म के दौरान हल्का दर्द और अधिक रक्तस्राव। ये शिकायतें तब कम हो जाती हैं। यदि तांबे की परत चढ़ाने वाली महिला को एक महीने के लिए उसके पास जाने के बाद भी कोई असुविधा महसूस नहीं होती है, तो उसे तीन से छह महीने बाद फिर से जाना चाहिए। यदि तांबा अपने आप बाहर आ जाता है, तो उसे परिवार कल्याण केंद्र में जाकर दूसरा लेने के लिए कहें। यदि, हालांकि, वह मासिक धर्म के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव की शिकायत करती है, तो उसे समझाएं कि यह जल्द ही कम हो जाएगा। यदि उसका रक्तस्राव या अन्य शिकायतें एक या दो महीने में कम नहीं होती हैं, तो उसे परिवार कल्याण केंद्र के डॉक्टर के पास वापस भेज देना चाहिए।

गर्भनिरोधक गोलियाँ

इन गोलियों को लेना बहुत आसान होता है लेकिन इन गोलियों को भूल जाना भी बहुत जोखिम भरा होता है। इसलिए नियमित रुप से गोलियां लेना जरुरी है। ये गोलियां रक्त के थक्कों का कारण बन सकती हैं। इससे पैरों में सूजन और दर्द हो सकता है। कभी-कभी रक्तचाप बढ़ जाता है। इसके लिए नियमित जांच की आवश्यकता होती है। यदि टेबलेट परिवार कल्याण केंद्र से लाई जाती है, तो एक प्रति एक माह के बाद परिवार कल्याण केंद्र को भेजी जानी चाहिए। यदि कोई शिकायत है, तो डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता से परामर्श करना आवश्यक है। अगर इन गोलियों से थकान या हल्का खून बहने की शिकायत हो तो यह कहना चाहिए कि शिकायत कुछ ही दिनों में कम हो जाएगी। हालांकि, अगर उसकी शिकायत दो महीने के बाद भी बंद नहीं होती है और जारी रहती है, तो उसे फिर से केंद्र में एक डॉक्टर को देखना चाहिए। यदि आपको सिरदर्द या सूजन या पैर में दर्द है, तो भी आपको परिवार कल्याण केंद्र जाना चाहिए।

पुरुष नसबंदी

नसबंदी शल्य चिकित्सा द्वारा की जाती है। यह पुरुष शुक्राणु कॉर्ड को अवरुद्ध करता है, इसलिए शुक्राणु वीर्य के साथ लिंग तक नहीं पहुंच पाता है। हालाँकि, पुरुष का स्खलन जारी रहता है और उसकी यौन क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मर्दानगी और यौन क्षमता के बारे में गलत धारणाओं को दूर करने के लिए पर्याप्त और संवेदनशील परामर्श उपयोगी है। किसी भी हथियार का उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन थूथन के दोनों किनारों पर छेद ड्रिल किए जाते हैं और नसों को काट दिया जाता है या चुटकी ली जाती है। नसबंदी एक छोटी और सरल सर्जरी है एक आदमी को कम से कम जरुरत होती है 48 घंटे का आराम। उसे एक सप्ताह तक कोई भारी वस्तु नहीं उठानी चाहिए। पुरुष नसबंदी हमेशा अच्छा होता है क्योंकि पुरुष जननांग महिला के अनुपात से बाहर होते हैं और शरीर के अन्य हिस्सों में ज्यादा हस्तक्षेप नहीं करते हैं, जटिलताओं को कम करते हैं।

महिला परिवार नियोजन सर्जरी

इसमें एक महिला के पेट में एक छोटा चीरा लगाना और उसकी फैलोपियन ट्यूब में जाना शामिल है, जो कट, बंधी या पिंच होती है। इसलिए, अंडाशय में बनने वाले अंडे शुक्राणु के साथ निषेचित नहीं होते हैं। यह सर्जरी बहुत प्रभावी है अगर इसे ठीक से किया जाए।

अवांछित गर्भधारण के लिए नि:शुल्क अंतराल इंजेक्शन

सर्जरी के साथ-साथ महिलाओं के पास परिवार नियोजन का एक और आसान और सुरक्षित विकल्प है। बिना सर्जरी के अनचाहे गर्भ के लिए सरकार के स्वास्थ्य विभाग द्वारा अंतरा के इंजेक्शन मुफ्त दिए जाते हैं। इंजेक्शन लेने के बाद महिलाओं को तीन महीने तक गर्भवती होने की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। पहली संतान को शादी के बाद देर से रखने या दो संतानों के बीच दूरी बनाए रखने के लिए अक्सर महंगी दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि, अब अवांछित गर्भधारण से छुटकारा पाने के सरल, सुरक्षित और उपयोगी तरीके हैं। महिलाओं के लिए परिवार नियोजन करना आसान बनाने के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा डिस्टेंस इंजेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। एक बार यह इंजेक्शन लग जाने के बाद भ्रुण तीन महीने तक नहीं टिकेगा।

महिलाओं के लिए इंजेक्शन के फायदे

अंत:शिरा इंजेक्शन महिलाओं को एनीमिया और डिम्बग्रंथि के कैंसर से बचाता है। साथ ही संभोग पर भी प्रजनन क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हालांकि, इंजेक्शन बंद होने के बाद गर्भावस्था को रुकने में सात से दस महीने तक का समय लग सकता है। परिवार नियोजन के लिए इंटरवल इंजेक्शन लेना एक अच्छा विकल्प है। इंजेक्शन सभी सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध कराया जाएगा। यह महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करता है। अनचाहे गर्भ के लिए एक बेहतरीन उपाय।

- डॉ.दिनेश सुतार, अपर जिला स्वास्थ्य अधिकारी, जिला परिषद गोंदिया

भुखमरी का दायरा

दुनिया में भुखमरी की स्थिति पहले के मुकाबले ज्यादा विकराल हुई है।

इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी कि जिस दौर में दुनिया विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विकास और प्रयोग की नई ट्रंचाइयां छू रही है, उसी में समूचे विश्व में भुखमरी के हालात का सामना करने वाले लोगों की तादाद में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। यों अमूमन हर साल इस मसले पर आने वाली अध्ययन रिपोर्टों में भुखमरी की व्यापकता और जटिलता की व्याख्या की जाती है, मगर यह समझना मुश्किल है कि इसकी जद में सबसे ज्यादा प्रभावित देशों की सरकारें भुखमरी पर काबू पाने के लिए ठोस और नीतिगत कदम क्यों नहीं उठातीं? अब एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र की ताजा वैश्विक खाद्य सुरक्षा रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया में भुखमरी की स्थिति पहले के मुकाबले ज्यादा विकराल हुई है।

विश्व की करीब दो अरब तीस करोड़ लोगों को भोजन सामग्री जुटाने के लिए मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट के मुताबिक, कोरोना महामारी और उसके बाद रुस-यूक्रेन युद्ध ने हालात को और विकट बनाने में अहम भूमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र की कई एजंसियों की ओर से संयुक्त रुप से प्रकाशित इस रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया 2030 तक सभी रुपों में भूख, खाद्य असुरक्षा और कुपोषण को खत्म करने के अपने लक्ष्य से और दूर जा रही है।

हाल के उपलब्ध साक्ष्य बताते हैं कि दुनिया भर में स्वस्थ खुराक का खर्च उठाने में असमर्थ लोगों की संख्या तीन अरब से ज्यादा हो गई। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में मुख्य कारण के रुप में कोविड-19 महामारी के दौरान उपभोक्ता खाद्य कीमतों में वृद्धि के प्रभाव को बताया गया है। जाहिर है, महामारी का सामना करने के क्रम में जो उपाय अपनाए गए, उनसे विषाणु के प्रसार की रोकथाम में कितनी मदद मिली, इसका आकलन बाकी है, लेकिन इसके व्यावहारिक असर के रुप में अगर लोगों के सामने पेट भरने तक का संकट पैदा हो गया तो इस पर फिर से सोचने की जरुरत है।

यह सवाल भी स्वाभाविक है कि जहां अलग-अलग देशों सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस मसले पर बारीक नजर रखने वाली संस्थाओं सहित बड़ी तादाद में उच्च स्तर के विशेषज्ञ मौजूद हैं, वहां से इसके दूरगामी हल के लिए ठोस नीतियां क्यों तैयार नहीं हो पातीं? उल्टे यह समस्या लगातार और गंभीर होती गई है और इस मसले पर किसी नई रिपोर्ट पर हैरानी नहीं होती, मगर इससे इतना जरुर पता चलता है कि विश्वभर में नीतियां बनाने और उन्हें लागू करने को लेकर कोई संतुलित रुख नहीं अपनाया जाता।

दरअसल, सुझाव के समांतर अगर धरती पर मौजूद संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल को लेकर गंभीर प्रयास किए जाएं तो खाद्य असुरक्षा और भुखमरी के हालात से निपटने के रास्ते निकल सकते हैं। लेकिन युद्ध और अन्य बेमानी मामलों पर बेलगाम धन खर्च करने और मौजूद संसाधनों को भी नष्ट किए जाने के बरक्स भुखमरी को लेकर विश्व समुदाय की ओर से इतनी ही गंभीरता नहीं दिखाई जाती, तो इसके पीछे किसका हित है? अभाव से जूझती आबादी को पोषणयुक्त संतुलित भोजन मुहैया कराने को लेकर चिंता जताई जाती है, लेकिन हकीकत यह है कि बहुत सारे लोगों को जीने के लिए न्यूनतम भोजन भी नहीं मिल पा रहा।

लंबे समय से क्या यह समस्या स्थिर इसलिए है कि भुखमरी के भुक्तभोगी तबके बेहद गरीब और कमजोर समुदायों के होते हैं, जिनकी परवाह करना सरकारें जरुरी नहीं समझतीं? ऐसा क्यों है कि दुनिया में विज्ञान के आविष्कारों और इसकी प्रगति के नए आयामों के बीच अंतरिक्ष की दुनिया और नए ग्रहों पर जीवन तक बसाने की बातें होती हैं और दूसरी ओर धरती पर ही मौजूद आबादी का पेट भरने के इंतजाम नहीं हो पा रहे!

सांसद प्रफुल पटेल के प्रयास सदैव जनहितार्थ - पूर्व विधायक राजेन्द्र जैन

प्रफुल पटेल की सांसद निधि से जिले में 2 करोड़ 62 लाख रु. के विविध विकास कार्य मंजूर

बुलंद गोंदिया - सांसद प्रफुल पटेल तत्कालीन सरकारों में केबिनेट मंत्री रहें। देश का प्रतिनिधित्व किया, पर वो देश के विकास के साथ अपने जिले को कभी नही भूले। महाराष्ट्र की राजनीति में एवं महाविकास आघाडी सरकार के दौरान भी वे शासन और जनता के बीच के पुल साबित रहे। अनेकों महत्वाकांक्षी कार्य आज उनके प्रयासों से जिले में पूरे हुए है एवं आगामी समय मे भी वे गोंदिया जिले के विकास हेतु कटिबद्धता से कार्य कर रहे है। उक्त आशय पूर्व विधायक राजेन्द्र जैन ने व्यक्त किया।

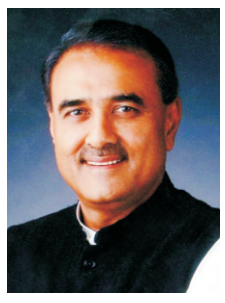

राजेन्द्र जैन ने कहा, सांसद प्रफुल पटेल के प्रयासों से उनकी सांसद स्थानिक विकास निधि अंतगर्त गोंदिया जिले की सभी तहसीलों में करीब 2 करोड़ 62 लाख रु. के विविध विकास कार्यो को मंजूरी मिली है। आगामी समय में भी सांसद पटेल निरंतर प्रयासरत होकर जिले में अनेक कार्यो को कटिबद्धता से करने प्रयासरत है।

राष्ट्रीय लोक अदालत १३ अगस्त को ८ अगस्त तक दे आवेदन

बुलंद गोंदिया - राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, दिल्ली के निर्देशानुसार एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, मुंबई के दिशा-निर्देशों के अनुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला न्यायालय, गोंदिया, जिला न्यायालय, श्रम न्यायालय, जिला उपभोक्ता शिकायत निवारण के माध्यम से आयोग और तहसील कानूनी सेवा समिति राष्ट्रीय लोक अदालत 13 अगस्त 2022 को आयोजित होंगी। लोक अदालत में दाखिल होने से पहले के मामले के साथ-साथ अदालत में दायर आपराधिक मामलों से समझौता, एनआई अधिनियम की धारा 138, बैंक वसूली मामले, वैवाहिक / पारिवारिक विवाद मामले, श्रम मामले, भूमि अधिग्रहण मामले, नागरिक मामले, किराया, बैंक मामले, बिजली और पानी के बिल (चोरी के मामलों को छोड़कर) के साथ-साथ सभी प्रकार के समझौता फाइलिंग के साथ-साथ प्री-फाइलिंग मामले भी रखे जाएंगे। न्यायाधीशों, विशेषज्ञ वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का एक पैनल मामलों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाने में सहायता करेगा। जो पक्ष समझौते के लिए इस लोक अदालत में अपने मामले दर्ज करना चाहते हैं, वे 8 अगस्त, 2022 तक संबंधित अदालत में आवेदन दायर करें। साथ ही, प्री-फाइलिंग केस के लिए, सभी बैंकों, संबंधित या आवेदकों को भी 8 अगस्त, 2022 तक जिला कानूनी सेवा प्राधिकरण, जिला न्यायालय, गोंदिया या तालुका कानूनी सेवा समिति को आवेदन जमा करना चाहिए। हालांकि, सभी संबंधित पक्षों को इस अवसर का लाभ उठाकर अपने मामलों को लोगों की अदालत में तुरंत निपटाना चाहिए। ऐसी अपील जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं मुख्य जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव ने की है।

विदर्भ में निकलेंगी मंडल यात्रा : २ अगस्त को पहुंचेगी गोंदिया जिले में

युवाओं और छात्रों के बीच अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरुकता

बुलंद गोंदिया - विदर्भ के सात जिलों में मंडल दिवस के अवसर पर ओबीसी, वीजेएनटी और एसबीसी छात्रों को मंडल आयोग के बारे में शिक्षित करने और उनके अधिकारों और अधिकारों को समझाने के लिए मंडल आयोग जागरुकता यात्रा का आयोजन किया जाएगा।

विदर्भ में ओबीसी, वीजेएनटी, एसबीसी और अन्य सामुदायिक संगठनों के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की बैठक में यह निर्णय लिया गया। मंडल आयोग जागरुकता यात्रा 1 से 7 अगस्त तक भंडारा, गोंदिया, गढ़चिरौली, चंद्रपुर, यवतमाल, वर्धा और नागपुर जिलों में होगी। बैठक में ओबीसी वीजेएनटी, एसबीसी समुदाय के विभिन्न मुद्दों और समाधान, छात्रों, युवाओं, अधिकारियों, कर्मचारियों, ओबीसी के छात्रावासों, महाज्योति और ओबीसी आर्थिक विकास निगम योजनाओं, छात्रवृत्ति लाभ, ओबीसी की जनगणना आदि के बारे में चर्चा की गई।

यात्रा के माध्यम से ओबीसी के लाभ के लिए बना बी.पी. मंडल आयोग की सिफारिशों से ओबीसी समुदाय को अवगत कराया जाएगा और सरकार को इन सिफारिशों को

आज के हालात में लागू करने की जरुरत को सार्वजनिक किया जाएगा। छात्रों को ओबीसी छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं, महाज्योति की योजनाओं, अन्य पिछड़ा वर्ग वित्त निगम की योजनाओं, विदेशों में पढ़ने वाले ओबीसी छात्रों के लिए सरकारी छात्रवृत्ति योजनाओं और विश्व संस्थान की छात्रवृत्ति योजनाओं के बारे में बताया जाएगा।ओबीसी समुदाय एकीकरण का मुख्य उद्देश्य सरकार के पास लंबित ओबीसी समुदाय की अन्य विकासात्मक मांगों को पूरा करना होगा। ओबीसी यूथ राइट्स फोरम, ओबीसी राइट्स फोरम, ऑल सोसाइटी ओबीसी फोरम, संघर्ष वाहिनी, संविधान फोरम, छात्र अधिकार एसो की भागीदारी थी।

बैठक में सभी सामाजिक संगठन ओबीसी, एनटी, वीजेएनटी, एसबीसी बड़ी संख्या में ओबीसी के साथ-साथ जनता के लिए सामाजिक आंदोलन में काम करने वाले सामाजिक संगठनों से इस यात्रा में भाग लेने की अपील की गई है। बैठक में मुख्य विषयों के साथ ओबीसी छात्रों के लिए एससी। विभिन्न वर्गों के छात्रों के लिए स्वाधार जैसी योजनाओं का कार्यान्वयन, जिला और तालुका स्तर पर महाज्योति सेवकों की नियुक्ति, समाज में महाज्योति संस्था की योजनाओं को प्रचारित करने के लिए बार्टी संस्था के समतादूत के रुप में, जिला स्तर पर महाज्योति प्रकोष्ठ की स्थापना, स्थानीय स्वशासन विकास के लिए संस्थानों में बहुसंख्यक ओबीसी समुदाय, ओबीसी बहुजन कल्याण अध्यक्ष का पद सरकार द्वारा बनाया गया था, असंवैधानिक आपराधिक परत की स्थिति को समाप्त कर दिया गया था, ओबीसी छात्रों के लिए छात्रावास तुरंत शुरु किया गया था। महाज्योति संस्था को अन्य संस्थानों की तरह आर्थिक रुप से व्यवहार्य बनाया गया था।

बलिराज धोटे, दीनानाथ वाघमारे, उमेश कोरम, प्रमोद कालबंधे, अतुल खोबरागड़े, खेमेंद्र कटरे, गोंदिया जिले से ओबीसी अधिकार मंच के संयोजक, अशोक लांजे, तीर्थराज, ओबीसी संघर्ष कृति समिति के कोषाध्यक्ष कैलाश भेलावे, गोंदिया तहसील अध्यक्ष सुनील पटले, ओबीसी सेवा संघ के महासचिव प्रेमेंद्र चौहान, सी.पी. बिसेन, प्रेमलाल साथवणे, पिछड़ा ओबीसी संघ के समन्वयक, रमेश लांजेवर, श्रवण फरकड़े, नामदेव राउत गोपाल सेलोकर, डॉ. वैरागड़े, मनोज चव्हाण, ए.ए. डेकाटे, योगिता मचामवार, अश्विनी नागुलवार, दीपक पडोले, अर्चना को ओबीसी कार्यालय स्वाति आदवार जैसे पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार मेले का आयोजन

बुलंद गोंदिया - स्वतन्त्रता के अमृत महोत्सव एवं विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर जिला कौशल विकास, रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन केन्द्र, गोंदिया कार्यालय, 19 जुलाई 2022 को प्रात: 11 बजे राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, फुलचुरटोला, गोरेगांव रोड, गोंदिया में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दृष्टि से जिले के बेरोजगार युवाओं के लिए जिला स्तरीय रोजगार मेला का आयोजन किया गया जाएगा। रोजगार मेले में विभिन्न कंपनियों के उद्यमी भाग लेंगे। इच्छुक उम्मीदवार इस जिला स्तरीय रोजगार मेले में भाग लें। दसवीं और बारहवीं कक्षा, आईटीआई, साथ ही किसी भी शाखा के स्नातक उत्तीर्ण बेरोजगार उम्मीदवारों के लिए रोजगार का सुनहरा अवसर है। उम्मीदवारों को शैक्षिक योग्यता प्रमाण पत्र, जिला कौशल विकास रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन केंद्र का पंजीकरण कार्ड लाना आवश्यक है।

अधिक जानकारी के लिए जिला कौशल विकास, रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन केंद्र से 07182-299150 या gondiarojgar @gmail.com पर संपर्क करें। सहायक आयुक्त, जिला कौशल विकास, रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन केंद्र गोंदिया ने इस रोजगार मेले में अधिक से अधिक बेरोजगार अभ्यर्थियों से भाग लेने की अपील की है।

जिप सभापति सविता पूराम के अधिकारों का हनन शासकीय कार्यक्रम से जानबूझकर रखा वंचित

आमगांव-देवरी के विधायक व दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिला परिषद की महिला वह बाल कल्याण समिति कि सभापति सविता संजय पुराम के सभापति पद के अधिकारों का जानबूझकर हनन करते हुए आमगांव देवरी के विधायक व संबंधित अधिकारियों द्वारा शासकीय कार्यक्रम से वंचित रखा है। जिस पर दोषियों पर कार्रवाई करने मुख्यमंत्री के नाम का पत्र जिलाधिकारी को सौंपा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार महिला आर्थिक विकास महामंडल गोंदिया के अंतर्गत तेजस्विनी महाराष्ट्र ग्रामीण महिला सक्षमीकरण कार्यक्रम स्वालंबन लोक संचालित साधन केंद्र आमगांव कि 13 वी वार्षिक सर्वसाधारण सभा दिनांक 8 जुलाई 2022 को आयोजित की गई थी। उपरोक्त कार्यक्रम में आमगांव देवरी के विधायक कोरोटे व कांग्रेस पक्ष के जिला परिषद सदस्य उपस्थित थे। उपरोक्त कार्यक्रम शासन की निधि से चलाया जाता है, किंतु जिला परिषद में महिला व बाल कल्याण सभापति होने के बावजूद उपरोक्त कार्यक्रम की किसी भी प्रकार की सूचना ना देते हुए जानबूझकर मुझे इस कार्यक्रम से अलग रखने का कार्य किया गया है। जिससे महाराष्ट्र जिला परिषद व पंचायत समिति अधिनियम 1961 के अंतर्गत प्राप्त अधिकारों का हनन संबंधित कार्यक्रम के आयोजको व उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा किया गया है। जिसके चलते उपरोक्त संबंधित दोषियों पर कार्यवाही की जाए ऐसी मांग का पत्र मुख्यमंत्री महाराष्ट्र शासन, उपमुख्यमंत्री व मुख्य सचिव के नाम जिलाधिकारी गोंदिया को सभापति पुराम ने दिया।

किसानों द्वारा फसल बीमा के पंजीकरण एवं नुकसान की पूर्व सूचना के लिए फसल बीमा कंपनी से करे संपर्क

बुलंद गोंदिया - जिले में एचडीएफसी इरगो जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के माध्यम से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की जा रही है। जिले के सभी बीमित किसानों को फसल बीमा के संबंध में अपने तहसील प्रतिनिधियों से संपर्क करना चाहिए और पंजीकरण पर मार्गदर्शन लेना चाहिए। यदि बुवाई के बाद कोई नुकसान होता है, तो उन्हें नुकसान की पूर्व सूचना दर्ज करनी चाहिए।

अग्रिम सूचना और शिकायत के लिए कंपनी की ई-मेल आईडी rakesh.raghu@hdfcergo.com है और बीमा कंपनी का टोल फ्री नंबर 1800 2660 700 है। यह योजना ऋणी और गैर-ऋणग्रस्त किसानों के लिए वैकल्पिक है। साथ ही, कर्जदार किसानों के पास योजना में भाग नहीं लेने का विकल्प है। जो किसान योजना में भाग नहीं लेना चाहते हैं, उन्हें अंतिम तिथि (31 जुलाई) से सात दिन पहले बैंक को घोषणा पत्र जमा करना होगा। ऐसी अपील जिला कृषि अधीक्षक हिंदूराव चव्हाण ने की है।

किसानों के हितों के लिए २५ गोदाम बनाएंगे

कृषि दिवस पर जि.प. अध्यक्ष पंकज रहांगडाले की घोषणा

बुलंद गोंदिया - जिले में धान की खेती पर जोर है। जिला परिषद गोंदिया के अध्यक्ष पंकज रहांगडाले ने धान की खेती में हुई प्रगति पर विचार करने की आवश्यकता व्यक्त करते हुए किसानों से नकदी फसल उत्पादन पर ध्यान देने की अपील की। इस बीच, उन्होंने किसानों के हितो के लिए जिले में 25 गोदाम और कोल्ड स्टोरेज स्थापित करने की मंशा भी जाहिर की।

वसंतराव नाईक जिला परिषद हॉल में आयोजित कृषि दिवस कार्यक्रम में मार्गदर्शन देते हुए बोल रहे थे। जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल पाटिल, उपाध्यक्ष इंजीनियरिंग यशवंत गणवीर, सभापति, कृषि एवं पशुपालन समिति, रुपेश कुथे, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती शीतल पुण्ड, मुख्य लेखा एवं वित्त अधिकारी जर्नादन खोटरे, जिला कृषि अधीक्षक हिंदुराव चव्हाण, कृषि विकास अधिकारी उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी नरेश भंडारकर, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी मौजूद थे।

किसान सुबह-सुबह खेत में जाता है और कड़ी मेहनत करता है। उनका दर्द, उनकी मेहनत को समझने की जरुरत है। खेतों में काम करने वाले किसानों को उनकी उपज का मान सम्मान और उचित दाम मिलना चाहिए। सरकारी दयतरों में नहीं है कृषि दिवसय किसान बांध उत्सव पर जोर देते हुए जिला परिषद के उपाध्यक्ष इंजी. यशवंत गणवीर ने कर्मचारियों से वन डे फॉर एग्रीकल्चर पहल को लागू करने की अपील की। हमारा जिला कृषि प्रधान है। जिले में पानी भी प्रचुर मात्रा में है। आप अलग-अलग समय पर अलग-अलग फसलें लेकर प्रगति कर सकते हैं। जिला परिषद गोंदिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी से अपील की गई है कि किसान केवल उपज लेने पर ही न रुकें, बल्कि उपज के विपणन पर ध्यान दें। संचालन अनिल पाटिल ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत वसंतराव नाईक के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित कर की गई। इस दौरान धाबेटेकडी के प्रगतिशील किसान ललित सोनवणे, बोंदगांव देवी के किसान कुसान झोडे और मलकानपुर के किसान नितिन पाटनकर को शॉल और नारियल देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की सफलता के लिए जिला परिषद के कृषि विभाग के समस्त कर्मचारियों ने अथक परिश्रम किया।

डॉक्टर सबसे अच्छा सामाजिक कार्यकर्ता : इंजी.यशवंत गणवीर

आधुनिक समय में व्यक्तियों की जीवन प्रत्याशा बढ़ गई है। रोग जो भी हो, विज्ञान की प्रगति ने उसे दूर कर दिया है। सिर्फ एक व्यवसाय के रुप में नहीं, वहीं दूसरी ओर अच्छी समाज सेवा के संकल्प के रुप में डॉक्टरों की सेवा बहुत महत्वपूर्ण है, इंजी.यशवंत गणवीर ने व्यक्त किया। उन्होंने डॉक्टर्स डे के अवसर पर सभी डॉक्टरों को शुभकामनाएं दीं और डॉक्टरों से समाज सेवा के इस व्रत के लिए और अधिक सक्रिय होने और गरीबों तक पहुंचने की अपील की। वह जिला परिषद में आयोजित स्वास्थ्य समिति की बैठक में मार्गदर्शन देते हुए बोल रहे थे। जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर इस अवसर पर नितिन वानखेड़े एवं अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

जिले की स्वास्थ्य सेवाओं में निधि की कमी नहीं होने देंगे - जिप सभापति संजय टेंभरे

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिले के ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले नागरिकों को प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा समय पर उपलब्ध कराने व स्वच्छता संबंधित योग्य नियोजन किए जाने पर स्वस्थ समाज का निर्माण होगा तथा स्वास्थ्य विभाग व स्थानीय पदाधिकारियों व कर्मचारियों के आपसी तालमेल से ही उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा दी जा सकती है। इसके लिए जिले में स्वास्थ्य सेवा संबंधित कार्यों के लिए निधि की कमी नहीं होने दी जाएंगी, ऐसा वक्तव जिला परिषद के बांधकाम व वित्त सभापति संजय टेंभरे द्वारा रावणवाड़ी के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित समीक्षा सभा में कहा।

गौरतलब है कि गोंदिया तहसील के रावणवाड़ी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वास्थ्य संबंधित समीक्षा सभा आयोजित की गई थी उपरोक्त सभा में तहसील के सभी स्वास्थ्य अधिकारी, वैद्यकीय अधिकारी, स्वास्थ्य सेवक तथा रावणवाड़ी स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत आने वाले आने वाली सभी 10 ग्राम पंचायत व सभी ग्रामों के सरपंच, उपसरपंच, ग्राम सेवक, शिक्षक,

आंगनवाड़ी सेविका, आशा वर्कर व स्थानीय नागरिकों की उपस्थिति में आयोजित की गई। इस अवसर पर स्वास्थ्य संबंधित विषय पर चर्चा की गई, जिसमें उपरोक्त क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी ग्रामों में कोविड-19 टीकाकरण शत प्रतिशत किया जाए। इसके लिए तत्काल नियोजन हो तथा ग्राम स्तर पर मानसून के दौरान होने वाली बीमारियां ना फैले इसके लिए आवश्यक उपाय योजना करने का निर्देश सभापति टेंभरे ने दिया। साथ ही सभी स्वास्थ्य उपकेंद्र, आंगनवाड़ी की इमारतों तथा सभी शालाओं के विद्यार्थी व नागरिकों को योग्य सुविधा प्राप्त इसके लिए जिला परिषद द्वारा निधि की कमी नहीं होने दी जाएंगी।

पूर्व विधायक अग्रवाल ने आपदाग्रस्त परिवारों से की सांत्वना भेंट

बुलंद गोंदिया - गोंदिया विधानसभा के कारंजा / भद्रुटोला टोला निवासी 10 वर्षीय पवन विजय गाते व 8 वर्षीय वंश उपराडे की ग्राम के समीप पानी से भरे एक गष्टे में डूबने से दुखद आकस्मिक निधन हो गया था। इस दुखद घड़ी में शोकाकुल दोनों परिवारों को पूर्व विधायक गोपालदास अग्रवाल द्वारा भेंट देकर सांत्वना दी। तहसीलदार के माध्यम से शासकीय आर्थिक सहायता का यदि कोई योजना में प्रावधान नहीं है तो दोनों परिवारों को मुख्यमंत्री सहायता निधी व जिला परिषद गोंदिया के माध्यम से आर्थिक प्रस्ताव देने का प्रस्ताव देने का निर्देश तहसीलदार को दिया। इस अवसर पर पूर्व विधायक गोपालदास अग्रवाल, तहसील भाजपा अध्यक्ष ठाकरे, जिप बांधकाम सभापति संजय टेंभरे, एपीएमसी संचालक अरुण दुबे, सरपंच कोमल धोटे, अशोक लिचड़े, योगराज उपराडे, महेंद्र सहारे, बलभद्रे, भीमटे, संजय बडोले, मजहर भाई, डॉ सुलाके, महेंद्र उपराडे सहित अन्य उपस्थित थे।

जिप अध्यक्ष राहंगडाले ने इमारत का किया निरीक्षण फैली गंदगी को तत्काल साफ करने के दिए निर्देश

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिला परिषद के अध्यक्ष का पदभार संभालने के पश्चात अपनी कार्यप्रणाली से चर्चा में रहने वाले जिला परिषद अध्यक्ष पंकज राहंगडाले द्वारा जिला परिषद की इमारत का आकस्मिक निरीक्षण कर इमारत परिसर के सभी सार्वजनिक शौचालय, सिढी गलियारे तथा इमारत के अंतिम मंजिल की पानी की टंकी का स्वयं निरीक्षण किया। इस दौरान उन्हें संपूर्ण इमारत में बड़े पैमाने पर गंदगी व कचरा दिखाई दिया जिसे तत्काल साफ करने का निर्देश अधिकारियों को दिया।

उल्लेखनीय है कि संपूर्ण जिले के विकास के लिए जिला परिषद का महत्वपूर्ण योगदान है, किंतु जिला परिषद की इमारत में ही स्वच्छता संबंधित अनदेखी किए जाने का मामला सामने आने पर जिप अध्यक्ष पंकज राहंगडाले द्वारा नाराजगी व्यक्त की गई तथा जिप के मुख्य कार्यपालन अधिकारी व अन्य अधिकारियों को इस विषय पर तत्काल कार्यवाही करने का निर्देश दिया। विशेष यह है कि करीब 2 वर्षों से जिला परिषद में प्रशासक नियुक्त था जिसके चलते जिला परिषद के कार्यों पर अधिकारियों का ध्यान नहीं होने की शिकायतें नागरिकों द्वारा प्राप्त हो रही थी साथ ही जिला परिषद की इमारत पर भी अनदेखी होने के चलते सभी और गंदगी वह कचरा दिखाई दे रहा था। साथ ही अनेक वर्षों से इमारत का फायर ऑडिट नहीं होने का मामला भी सामने आने पर तथा इमारत में फायर इनट्यूशन लगे हुए नहीं दिखाई दिए जिससे कभी भी आग से एक भारी नुकसान होने की संभावना बनी हुई है। साथ ही इमारत में लगे हुए सीसीटीवी भी बंद, कचरा कुंडी नहीं, ऐसी अनेक शिकायतें पर निरीक्षण किए जाने पर अध्यक्ष को खामियां सामने आई जिससे गोंदिया जैसे जिले के लिए एक शर्म की बात है। इस दौरान उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि कम से कम अपने विभागों के बाहर स्वच्छता संबंधित दक्षता रखे तथा संपूर्ण इमारत को स्वच्छ और सुंदर बनाएं।

आपदा प्रबंधन दल ने पांगड़ी जलाशय में बाढ़ की स्थिति का अभ्यास किया

बुलंद गोंदिया - जिले में बारिश ने कहर बरपा रखा है। नतीजतन, जिले में जलाशय नदियों और नालों में जलस्तर तेजी से बढ़ गया है और मानसून अवधि के दौरान किसी भी समय बाढ़ की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसलिए, जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, गोंदिया बाढ़ की स्थिति में खोज और बचाव कार्य करने के लिए हर तालुका में जन जागरुकता कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। गत सप्ताह जिला खोज एवं बचाव दल ने गोंदिया के पंगाडी जलाशय में बाढ़ प्रशिक्षण का आयोजन किया। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण गोंदिया के माध्यम से नियमित रुप से रंगारंग प्रशिक्षण और अभ्यास आयोजित कर रहा है ताकि बाढ़ की स्थिति में जीवन के नुकसान और वित्तीय नुकसान के प्रभाव को कम किया जा सके। पांगड़ी में अभ्यास के दौरान खोज एवं बचाव दल के सदस्य नरेश उइके, राजकुमार खोटेले, जसवंत रहांगडाले, रवींद्र भंडारकर, संदीप कराडे, दीनू दीप, राजाराम गायकवाड़, महेंद्र ताजने, दुर्गप्रसाद गगंगापारी, मनोज केवट (चालक), मंगेश डोये आदि मौजूद थे।

बारिश का पानी जमा होने से पैर पसार रही बीमारियां

बुलंद संवाददाता आमगांव - बारिश के मौसम में हर जगह जलजमाव की समस्या निर्माण हो जाती है। कभी रोड पर तो कभी गड्ढो में पानी जमा हो जाता है जिससे मच्छरों के प्रकोप बढ़ जाता है। शहर में कही कही तो रोड पर ही घरों का पानी आता है। जिसे मैन रोड पर पानी जमा हो जाता है। बारिश के मौसम में बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है। मौसमी बीमारी, खाशी, शर्दी, बुखार आदि का प्रकोप बढ़ जाता है। नगर परिषद द्वारा इन सब जगहो पर ब्लीचिंग का छिड़काव करना चाहिए जिससे मच्छरों के प्रकोप बंद हो। तथा लोगो को राहत की सांस मिले। एक तो पहले ही लोग कोरोना जैसी महामारी से त्रस्त थे। ऊपर से बारिश के मौसम में मच्छरों से फैलने वाले मलेरिया जैसी बीमारी से परेशान होना पड़ता है। अगर कही जलजमाव की स्तिथि निर्माण होती है तो। नगर परिषद द्वारा जलजमाव की स्तिथि पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान देकर लोगो को होनेवाली समस्याओ से निजात दिलाए।

जिले में २० हजार ७३० हे.आर क्षेत्र में हुई धान की बुवाई

बुलंद गोंदिया - जिले में पिछले कुछ दिनों से रुक-रुककर झमाझम बारिश हो रही है। बारिश के पानी से जनजीवन प्रभावित होते नजर आ रहा है। जिले में मानसून विभाग द्वारा अच्छी बारिश होने के संकेत है। इस वर्ष अच्छी बारिश की उम्मीद होने से किसानों ने खेती के कामों को तेजी से करना शुरु कर दिया है। इस संदर्भ में कृषि विभाग ने बताया कि जिले में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 1 लाख 86 हजार 431 हेक्टेयर आर क्षेत्र पर खरीप फसलों को लगवाने का लक्ष्य रखा गया है। उसकी तुलना में अब तक तहसीलवार गांवो में 20 हजार 730.95 हेक्टेयर कृषि क्षेत्र में किसानों द्वारा बुवाई का कार्य पूर्ण किया गया है। धान फसल सहित अन्य फसलें किसानों द्वारा खेतों में लगाई गई है।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी खरीप फसल उत्पादन के संबंध में कृषि विभाग द्वारा नियोजन किया गया है। इस वर्ष जिले के तहसीलवार शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों द्वारा 1 लाख 86 हजार 431 हेक्टेयर क्षेत्र पर खरीप फसलों को लगाया जाने का लक्ष्य रखा गया है। उसी आधार पर जिले के किसानों द्वारा धान रोपाई का काम किया गया है। जिले में पिछले कुछ दिनों से रुक-रुककर झमाझम बारिश हो रही है। वहीं जिले के तहसीलवार कहीं-कहीं गांवो में जोरदार बारिश से अतिवृष्टी की स्थिति निर्माण हो चुकी है। जिले के मानसून विभाग द्वारा अच्छी बारिश होने के संकेत जारी हो चुके है। वर्तमान स्थिति में अच्छी बारिश की उम्मीद नजर आने से येलो अलर्ट घोषित किया गया है। जिसके चलते किसानों द्वारा खेत कामों को तेजी से किया जा रहा है। इस संदर्भ में कृषि विभाग ने बताया कि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी जिले के किसानों द्वारा 1 लाख 86 हजार 431 हेक्टेयर आर क्षेत्र में से 1 लाख 77 हजार 724 हेक्टेयर क्षेत्र पर धान बुवाई किया जाना है। उसी तरह मकई 24 हेक्टेयर, तुवल 6 हजार 532 हेक्टेयर और अन्य फसले 2 हजार 149 हेक्टेयर आर क्षेत्र पर लगायी जा रही है। कृषि विभाग के आंकडो के मुताबिक जिले के तहसीलवार गांवो में किसानों द्वारा अब तक 20 हजार 730।95 हेक्टेयर आर क्षेत्र पर बुवाई का काम किया जा चुका है। शेष कृषि क्षेत्र पर बुवाई का काम किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि सिंचन व्यवस्था के अनुसार किसानों द्वारा खेती कामों को पूरा किया जा रहा है। अधिकांश किसान बारिश पर निर्भर बताए जा रहे है। उसी के अनुसार खरीप फसलों को लगाया जा रहा है। जिसमें धान फसलों के साथ-साथ अन्य फसले किसानों द्वारा लगायी जा रही है।

आवश्यकता है

गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत आनेवाले सभी प्रभागों के सर्वे के लिये युवक/युवतियों की आवश्यकता है।

इच्छुक युवक/युवती दि 16 जुलाई 2022 तक अपना रिज्युम वॉट्सएप क्रमांक 9405244668 पर भेजें।

शैक्षणिक पात्रता : न्युनतम 12वीं पास

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित। संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८। (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है। न्यायालय क्षेत्र गोंदिया।